Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain College, Ara.

M.A. Sem-I, CC-2, Unit-III

Topic- हड़प्पा संस्कृति का प्रसार एवं इसकी भौगोलिक सीमा।- हड़प्पा संस्कृति

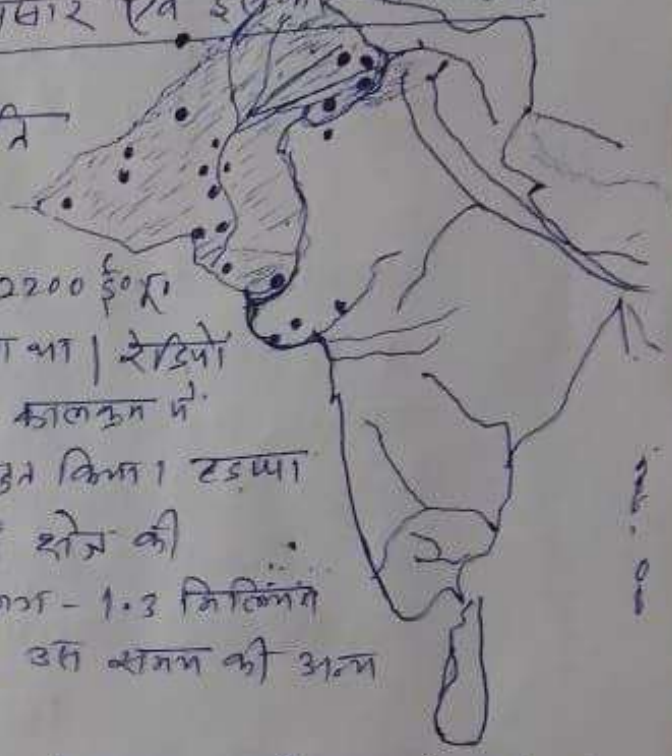

3500 ई०पू० से 1750 ई०पू० के बीच विद्यमान थी। इसकी प्रौढ़ता 2200 ई०पू० से 2000 ई०पू० के बीच का समय था। रेडियो कार्बन डेटिंग की खोज ने हड़प्पा कालक्रम में पूर्णता के एक नवीन सोपान को प्रस्तुत किया। हड़प्पा सभ्यता उस काल के सबसे बड़े क्षेत्र की सभ्यता थी। इसका क्षेत्र लगभग - 1.3 मिलियन वर्ग Km तक फैला था, जो कि उस समय की अन्य सभ्यताओं से काफी बड़ा था।

1,000 से ऊपर इसके स्थानों को खोजा जा चुका है। यह सभ्यता त्रिभुजाकार सिंधुघाटी सभ्यता का क्षेत्रफल लगभग - 1299600 वर्ग किमी है। लम्बाई पूर्व से पश्चिम 1100 Km तथा उत्तर से दक्षिण 1600 Km है। इस सभ्यता का विस्तार उत्तर के मांडा से लेकर दक्षिण में नर्मदा के मुहाने भगतराव दैमाबाद तक और पश्चिम में मकरान तटवर्ती पर स्थित सुत्कांगेडोर (बलूचिस्तान) से पश्चिमी उत्तरप्रदेश के मेरठ तक फैला है। इससे इस सभ्यता के विस्तारवादी स्वरूप का पता चलता है। इस सभ्यता के निवासी नए-नए क्षेत्रों में स्थल एवं जलमार्गों से जाकर बसते जा रहे थे। कुछ विद्वानों की धारणा है कि सिंधु सभ्यता का विस्तार मुख्यतः

गेहूँ और कपास उपजाने वाले क्षेत्रों में हुआ। अनेक विद्वानों की धारणा है कि हड़प्पा संस्कृति के अंतिम चरण में इस सभ्यता का विस्तार दक्षिण पूर्व में हुआ। इस समय तक प्रमुख नागरिक केन्द्र अपना महत्व खो रहे थे।

कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि भौगोलिक स्थिति में परिवर्तन तथा बाह्य आक्रमणों के कारण सिंधुघाटी से बाहर इस सभ्यता का प्रसार हुआ। आधुनिक अनुसंधानों से पहले की धारणाएँ निर्मूल सिद्ध हो जाती हैं। सौराष्ट्र, गुजरात और काठियावाड़ से प्राप्त हड़प्पा स्थलों की जानकारी के आधार पर यह तर्क अधिक युक्तिसंगत लगता है कि सिंधुघाटी के निवासी इस क्षेत्र में कृषि, उद्योग, और व्यापार के विकास के उद्देश्य से आए। इससे हड़प्पा सभ्यता के विस्तारवादी स्वरूप की पुष्टि होती है।

सिंधु सभ्यता के अतिरिक्त चन्हुदड़ो से झूकर और झांगर संस्कृति के पुरावशेष भी मिले हैं। यहाँ से प्राप्त मिट्टी के बर्तन और अन्य उपकरण हड़प्पा-मोहनजोदड़ो के सदृश्य हैं।

हड़प्पा संस्कृति का विस्तार जितने बड़े क्षेत्र में हुआ था, उतने बड़े क्षेत्र में प्राचीन मिस्त्र, मेसोपोटामिया की सभ्यताओं का विस्तार नहीं हुआ था। मिस्त्र एवं मेसोपोटामिया के लगभग दुगने क्षेत्र में हड़प्पा संस्कृति फैली हुई थी। यह हड़प्पा-संस्कृति की एक विशिष्टता मानी जा सकती है।